किताब है - आत्मबल, मनोबल और इच्छाशक्ति,

अध्याय है - २,

बिसय है - आत्मशक्ति

आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म है। बहुत-सी छोटी-छोटी चीजें आँख से नहीं दीखतीं पर सूक्ष्मदर्शक यन्त्र (माइक्रोस्कोप) से दीखती हैं। पर परमाणु या ईथर इतने छोटे होते हैं कि सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से भी दृष्टिगोचर नहीं होते। पर यह आत्मा इस ईथर से भी, परमाणु से भी लाखों गुणा अधिक छोटी है। इसकी लघुता और सूक्ष्मता को विचार करते हुए इसकी अपार और अनन्त शक्ति की ओर ध्यान देते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है।

एक सुई वा एक पतला-सा तिनका एक शहतीर को नहीं उठा सकता। एक बकरी ऊँट को नहीं उठा सकती, पर इधर देखिए आत्मा कितनी सूक्ष्म है, उसके सामने एक चींटी भी हिमालय के समान है बल्कि एक आत्मा के सामने एक चींटी हिमालय से भी कई गुणा बड़ी है। पर यही आत्मा जब चींटी के शरीर में आ जाती है तो चींटी के शरीर को समूची चींटी को लेकर इधर-उधर दौड़ा करती है।

आत्मा के मुकाबले में चींटी का शरीर भी हिमालय से बड़ा है तो दो-दो मन का मनुष्य और चालीस-चालीस मन का हाथी कितना बड़ा होगा, इसे आप स्वयं सोच लें। पर दो मन के मनुष्य शरीर को तथा चालीस मन के हाथी के शरीर को भी लेकर यही सूक्ष्मातिसूक्ष्म आत्मा ऐसी दौड़ती है, कूदती है और उछलती है मानो वह बोझ उसके सामने कुछ है ही नहीं।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

इस आत्मा की शक्ति चालीस ही मन तक उठाने के लिए सीमित नहीं है। इसका अपार बल अनंत और अथाह है। समुद्र की व्हेल मछली हाथी से सैकड़ों और हजारों गुणा बड़ी होती है। सुनने में तो आया है कि एकाध व्हेल मछलियाँ इतनी बड़ी होती है कि जहाज के यात्री उसे एक टापू समझ कर उतर पड़े हैं। यह व्हेल मछली एक साधारण पहाड़ से कम भारी नहीं होती होगी। इस व्हेल मछली के शरीर को भी लेकर यह आत्मा जब चाहती है उछलती है, कूदती है और मोटरकार से भी अधिक तेज दौड़ती है।

पर्वत भी उड़ सकते हैं

अत: यह मालूम होता है कि आत्मशक्ति की कोई सीमा नहीं है। व्हेल मछली ही क्यों, यदि एक आत्मा हिमालय पहाड़ में भी समा जाय तो वह इस हिमालय पर्वत को लेकर उछलेगी, दौड़ेगी, कूदेगी और उड़ेगी। हिमालय पर्वत ही क्यों, यदि इस भूगोल में भी एक आत्मा व्यापक हो जाय तो वह इस सारी पृथ्वी को भी लेकर दौड़ेगी। इस पृथ्वी ही को लेकर नहीं, यदि एक आत्मा या जीव इस अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में व्यापक हो जाए तो वह इस सारे विश्व ब्रह्माण्ड को भी लेकर उछलेगी, दौड़ेगी, कूदेगी, उड़ेगी और इनको अपने नियन्त्रण में रखेगी। अत: इस आत्मा का बल असीम है, अनन्त है और अपार है।

यह आत्मा सर्वशक्तिमान है

अपने पास में ही इस सर्वशक्तिमान आत्मा के रहते हुए भी जो किसी दूसरे की खुशामद करता है, जो किसी अन्य देवी-देवता या साकार और निराकार ईश्वर की प्रार्थना करता है, जो किसी दूसरे की पूजा और गुलामी करता है, वह अपनी आत्मा का अपमान और हत्या

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

करता है। इतनी बड़ी अपनी आत्मा को किसी का गुलाम बना देना ही आत्महत्या और खुदकुशी है।

खुद, खुदी और खुदा इन तीनों का मूल एक ही है। खुद, खुदी और खुदा में कोई भेद नहीं है। हमारा निज, हमारी खुदी और हमारा अपना आप ही जिसे लोग आत्मा कहते हैं, वही सर्वशक्तिमान है। जैसे हम अपनी इच्छा से बाजार जाते और लौट आते हैं; जैसे हम अपनी इच्छा से कहीं घूमने जाते और लौट आते हैं; ठीक उसी तरह से हम और आप अपने कर्मों द्वारा अपनी ही इच्छा की प्रेरणा से, अपने से ही यहाँ इस संसार में आये हैं। जो अपने से हुआ है वहीं 'स्वयंभू' है, खुद आने से 'खुदा' और बड़ा होने से 'ब्रह्म' है। खुदा, ब्रह्म और स्वयंभू सब इसी का नाम है।

अपने भाग्य का विधाता अपना आप है

हमारा अपना आप अपने कर्मों और अपने भाग्य का विधाता है। शरीर जो कुछ करता है आत्मा की इच्छा से करता है। एक तृण भी, एक अंगुली भी, बिना आत्मा की इच्छा के नहीं हिल सकती। आत्मा केवल शरीर को चलाने वाली, दौड़ने वाली और कुदाने वाली ही नहीं है किन्तु शरीर को बनाने और बिगाड़ने वाली, जिलाने और मारने वाली, रखने और छोड़ने वाली सब आत्मा ही है।

जब तक आत्मा है तब तक यह शरीर जीता है, जब आत्मा निकल जाती है तो वह बेकार होकर मृतक हो जाता है। जिस शरीर की उसकी अपनी आत्मा निकल जाती है उस शरीर को देवी-देवता, डॉक्टर, वैद्य और ईश्वर कोई ऐसा नहीं है जो जिला सके।

ईश्वर को लोग सर्वव्यापक कहते हैं। अतः भक्तों और मजहबी लोगों का ईश्वर तो सर्वव्यापक होने से उस मृतक शरीर में भी है जिसे

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

जीवात्मा ने छोड़ दिया है पर जीवात्मा के निकल जाने से मजहबी ईश्वर के रहते हुए भी शरीर सड़-गल कर नष्ट हो जाता है।
अतः इस शरीर को बनाने और बिगाड़ने वाला न ईश्वर है, न कोई देवी और देवता है और न वैद्य और डाक्टर हैं। इस शरीर को जिलाने वाला यदि कोई है तो उसका नाम है जीव। मन्त्र, तन्त्र भी कोई चीज नहीं। आत्मा के निकल जाने पर हजार देवी-देवता, मन्त्र और ईश्वर, खुदा और 'गाड' सब आकर भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। ईश्वर तो सर्वव्यापक होने से मुर्दे में भी है, पर एक जीव के निकल जाने से ईश्वर न उसे हिला सकता है न बुला सकता है। अतः शरीर को सजीव रखने वाला, सचेतन रखने और जीता रखने वाला जीव है, ईश्वर नहीं।

जीव के कार्य

शरीर को जब भोजन की जरूरत होती है तो भूख लगती है, यह आत्मा जानती है कि अब हमारे शरीर को भोजन चाहिए, पानी की आवश्यकता होने से प्यास लगती है। जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वैसी ही रूचि होती है। इस तरह से खाये हुए भोजन, पान किये हुए पानी, श्वास से भीतर खींचे हुए प्राण द्वारा यह आत्मा शरीर का पालन करती है। सारे शरीर में खून दौड़ा कर शरीर को ताजा, सजीव और सबल बनाये रखती है। सब आत्मा करती है, आत्मा बिना यह सब कुछ नहीं हो सकता। ईश्वर तो मजहबी लोगों के विश्वास के अनुसार सर्वव्यापक होने से उस मृतक शरीर में भी है जिसमें जीवात्मा नहीं है, पर जीवात्मा के न होने से उस मृतक शरीर की रक्षा संसार की कोई शक्ति नहीं कर सकती। अतः शरीर का पालन करने वाली और शरीर की रक्षा करने वाली एक ही शक्ति है जिसका नाम है आत्मशक्ति या आत्मबल।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

शरीर के भीतर ज्योंही ऐसे पदार्थ इकट्ठे हुए जो उस शरीर के लिए हानिकारक हैं तो आत्मा उसे प्रस्वेद, मूत्र, मल, वमन, प्रश्वास, आँसू और कफादि के रास्ते बाहर निकाल देती है। मल और मूत्र को आत्मा ही अपनी इच्छा से अपान वायु को प्रेरित करके शरीर के बाहर फेंकती और निकाल देती है श्वास नली में कफ के आ जाने पर खाँसकर निकाल देने वाली आत्मा ही है; शरीर में कहीं घाव लगा, कहीं कटा या फोड़ा वाला विकार आया कि आत्मा की ओर से रक्खे हुए शरीर के लाखों रक्षक-अणु खून के अणुओं पर सवार होकर वहाँ पहुँच जाते हैं। यदि इसमें बाहरी छेड़छाड़ न हो तो ये शीघ्र घाव को भर देते और टूटी हुई हड्डियों को भी जोड़ देते हैं। फोड़े के जहर को पकाकर वहाँ के चमड़े को पतला करके फाड़कर, वहाँ के घाव को भी अच्छा कर देते हैं। जहाँ कोई विकार आया कि वह आत्मा द्वारा निकाला गया। जहाँ कोई घाव लगा कि वह आत्मा द्वारा अच्छा किया गया। जब तक हमारी अन्तरात्मा इस शरीर में रहने की सचमुच इच्छा रखती है तब तक कोई बाहरी शक्ति, कोई रोग इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। जैसे बहुत से लोग अपनी टूटी-फूटी झोपड़ी को चलते-चलाते खुद फूंक देते और दूसरे को उजाड़ ले जाने देते हैं; अपने फटे पुराने कपड़ों और दूसरी सामग्रियों को फेंक देते और बाँट देते हैं, उसी तरह से आत्मा जिस शरीर को छोड़ना चाहती है उसकी परवाह नहीं करती और उसे रोगादि लूट लेते, बिगाड़ देते या हिंसक जीव-जन्तु फाड़ डालते हैं। जब तक यह आत्मा, जब तक यह अपना आप शरीर का रक्षक है, जब तक यह अपना आप शरीर में वर्तमान है, जब तक यह आत्मा, इच्छाशक्ति और मनोबल विश्वास के साथ निर्भय होकर अपनी इस पूर्णशक्ति के साथ इस शरीर की रक्षा करती है, तब तक कल्पित यमराज क्या, मजहबी लोगों के कल्पित भगवान भी इसका

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

कुछ नहीं बिगाड़ सकते। आत्मबल, इच्छाशक्ति या मनोबल अपने तमाम शत्रुओं का सामना करने के लिए काफी है। इस विषय पर हमारे रचे हुए दो स्वतन्त्र ग्रन्थ हैं - एक का नाम है **"नीरोग होने का अद्भुत उपाय"**; दूसरे का नाम है **"शरीर से अमर होने का उपाय"** इन ग्रन्थों को भी पढ़ लेना चाहिए।

यहाँ प्रश्न होता है कि यदि यह आत्मा अपने ही नियत किये हुए दिन पर या अपनी ही इच्छा पर आती-जाती है तो रोती क्यों है ? लड़कियाँ अपने ससुराल जबरदस्ती नहीं जातीं, पर रोती हैं। लोग अपने ससुराल अपनी इच्छा से जाते और अपनी इच्छा से ही लौटते हैं, पर लौटते समय आँखें डबडबा जाती हैं। मनुष्य अपनी इच्छा से ही बड़ी दूर नौकरी पर जाता है पर जाते समय रोता है। तीन बजे उठने के लिए मनुष्य स्वयं अपनी घड़ी की एलार्म वाली सूई तीन पर लगा देता है, पर जब घड़ी तीन बजने पर झन-झन-झन करके चिल्लाने लगती है तो स्वयं दुःखी होता और चारपाई से उठते वक्त झंखने लगता है। स्वयं तीन दिन की छुट्टी लेकर बनारस जाता है, पर जब तीन दिन बीत जाता है तब पछताता और कहता है कि और चार दिन छुट्टी क्यों नहीं ले ली। अपने प्रोनोट पर स्वयं दो रुपया सैकड़ा सूद लिख देता है, पर देते वक्त रोता है। मनुष्य स्वयं अपनी इच्छा से शराबी, जुआड़ी, अफीमची और वेश्यागामी हो जाता है, पर उसका परिणाम सामने आता है तो रोता है। आज वर्तमान में जो कुछ आपके पास है, सब आप ही की कमाई है, सब आप ही की इच्छा से है। चाहे इस जन्म की हो या पूर्व के गत जन्मों और अवस्थाओं की हो। कर्म बिना इच्छा के नहीं होते। अपनी इच्छा से ही मनुष्य जुआ का दाँव लगाता है पर हार जाने पर रोता है। यह सब लोग जानते हैं कि मनुष्य की आयु भी मनुष्य के पूर्व कर्मों का फल है। साथ ही यह भी

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

सबको मालूम है कि मनुष्य का कोई कर्म मनुष्य की इच्छा बिना नहीं हो सकता। बिना इच्छा के एक अंगुली भी नहीं हिलती। अतः जन्म मरण, रोग-दोष, प्रेम-द्वेष, सुख-दुःख और आना-जाना सब हमारी इच्छा पर निर्भर है, सब इच्छाशक्ति और आत्मबल के अधीन है।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.